करीब एक हजार साल पहले एक सम्प्रदाय हुआ करता था शिंगोन, जिसमें बौद्ध धर्म, प्राचीन शिंटो, ताओवाद व अन्य धर्मों के मिले-जुले नियमों का पालन होता था। शिंगोन मत ने एक भयावह और डरावनी प्रक्रिया विकसित की थी, जिसके तहत जीवित शरीर की ममी बना दी जाती थी। इसका लक्ष्य धार्मिक अनुशासन और समर्पण का प्रदर्शन करना था। इस प्रैक्टिस को सोकूशिनबुत्सू कहा जाता था और जापान के एक भिक्षुक कुकाई ने इसे शुरु किया था। इसमें कई वर्ष्णों की क्रूर प्रक्रिया से शरीर को सुखाया जाता था, जिसका अंतिम नतीजा मौत होती थी, जिसके बाद शरीर प्रिज़र्व हो जाता था। अपने ही शरीर को ममी बनाने की प्रक्रिया बहुत दर्दनाक और क्रूर होती थी। पहले हजार दिन तक तो भिक्षुक सिर्फ नट्स, बीज, फल और बैरीज़ खाते थे और बहुत कड़ा शारीरिक श्रम करते थे जिससे शरीर की सारी वसा खत्म हो जाए। दूसरा चरण भी एक हजार दिन का होता था, इस अवधि में वे सिर्फ पेड़ की छाल व जड़ें ही खाते थे। इस अवधि के बाद उरुशी वृक्ष के सत से बनी विष्णैली चाय पीते थे जिससे उल्टी आती थी और शरीर का पानी निकलने लगता था। यह चाय प्रिज़र्वेटिव की तरह भी काम करती थी तथा उन कीटों और बैक्टीरिया को नष्ट करती थी जिनकी वजह से मृत्यु के बाद शरीर सड़ने लगता है। छः साल की यातना के बाद अंतिम चरण में भिक्षुक खुद को पत्थर के एक मकबरे में बंदकर लेते थे जो उनके शरीर से थोड़ा सा ही बड़ा होता था। यहाँ पर वो पद्मासन में ध्यान मुद्रा में बैठ जाते थे तथा मृत्यु आने तक ऐसे ही बैठे रहते थे। एक छोटी नली से मकबरे में ऑक्सीजन दी जाती थी। मकबरे के अंदर से भिक्षुक रोज घंटी बजाता था ताकि बाहरी दुनिया को पता लगे कि वह जिंदा है। जब घंटी बजनी बंद हो जाती थी तो मान लिया जाता था कि वह मर गया है, इसके बाद नली हटा ली जाती थी और मकबरा सील कर दिया जाता था। एक हजार दिन बाद मकबरा खोला जाता था, तब तक भिक्षुक खुद को ममी बना चुका होता था। अगर शव संरक्षित स्थिति में मिलता था तो उस भिक्षुक को बुद्ध का दर्जा मिल जाता था। उसके शव को मकबरे से निकालकर मंदिर में स्थापित किया जाता था जहां उसकी पूजा होती थी। यह परम्परा उन्नीसवीं सदी तक चलती रही, बाद में जापान की सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया। माना जाता है कि, सैंकड़ों भिक्षुकों ने इस प्रक्रिया को अपनाया लेकिन केवल 28 ही अपने शव को ममी में बदल पाए। इनमें से कुछ जापान के मंदिरों में स्थापित हैं।

राष्ट्रपति बाइडन प्रधानमंत्री मोदी से हाथ मिलाने को बेताब दिखे

जी-7 समिट में फोटो सैशन से पहले राष्ट्रपति बाइडन दौड़कर प्रधानमंत्री मोदी के पास आये और उन्हें अपना अहसास कराने के लिए प्र.मंत्री मोदी के कंधे पर हाथ रखा

नई दिल्ली, 27 जून। प्रधानमंत्री मोदी जर्मनी में जी-7 की शिखर बैठकों में हिस्सा ले रहे हैं, जी-7 के तमाम नेताओं के बीच बैठकों एवं मुलाकातों का दौर चल रहा है।

इस दौरान ग्रुप फोटो सैशन के बाद का एक वीडियो सामने आया है। जिसमें देखा जा सकता है कि ग्रुप फोटो से पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन पीछे की तरफ से खुद चलकर या थोडा सा दौड़कर प्रधानमंत्री मोदी के पास आते हैं और उनका अभिवादन करते हैं। वीडियो को देखकर ऐसा लग रहा है कि, प्र.मंत्री मोदी को पुकारने के बाद राष्ट्रपति बाइडन ने अपना एहसास दिलाने के लिए प्र.मंत्री मोदी के कंधे पर दौड़कर हाथ रखा।

इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने भी उनसे गर्मजोशी से मुलाकात की। गौरतलब है कि, जिस अमेरिकी राष्ट्रपति से मुलाकात करने के लिए दुनियाभर के मुल्कों के राष्ट्राध्यक्ष महीनों का इंतजार करते हैं, वे प्रधानमंत्री मोदी से हाथ मिलाने खुद दौड़े आएं।

वीडियो में दिख रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी जब कैनेडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो से बात कर रहे थे, इस दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन उनसे मिलने के लिए खुद चलकर आए। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के कंधे पर पीछे से हाथ रखकर अपनी मौजूदगी का अहसास कराया, जिसके बाद दोनों नेताओं ने हाथ मिलाकर गर्मजोशी से एक दूसरे का अभिवादन किया। मोदी-बाइडन मुलाकात के इस वीडियो की जमकर चर्चा हो रही है। लोगों का मानना है कि, यह भारत के बढ़ते वैश्विक कद का प्रतीक है।

- **इस घटना का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें साफ तौर पर राष्ट्रपति बाइडन की बेताबी देखी जा सकती है।**
- **मोदी-बाइडन मुलाकात के इस वीडियो की जमकर चर्चा हो रही है। लोगों का मानना है कि, यह भारत के बढ़ते वैश्विक कद का प्रतीक है।**
- **प्रधानमंत्री कार्यालय ने ट्विटर पर कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रपति जो बाइडन, राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो से मुलाकात की।'' प्रधानमंत्री मोदी ने समूह फोटो के साथ एक कैप्शन भी ट्वीट किया, जिसमें लिखा था, ''विश्व नेताओं के साथ जी -7 शिखर सम्मेलन में।''**

भारत ने रूस-यूक्रेन संकट, कोविड महामारी और दूसरे मसलों में जैसी कूटनीति की है, उसका अमेरिका भी कायल है। यही कारण है कि जो बाइडन प्रधानमंत्री मोदी को इतना महत्व देते नजर आ रहे हैं। यूक्रेन पर रूस के हमले के दौरान जब पूरी दुनिया अलग-अलग ध्रुवों की तरफ खुलकर आ रही थी, उस दौरान भारत ने संतुलन को बनाए रखा। भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों के बावजूद रूस से भारी मात्रा में तेल आयात किया और अमेरिका को भी इससे कोई परेशानी नहीं हुई।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को यहां जी-7 शिखर सम्मेलन स्थल पर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के अलावा फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो से भी मुलाकात की। समूह फोटो खिंचवाने से पहले इन नेताओं के बीच बातचीत हुई।

जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज ने दक्षिणी जर्मनी में शिखर सम्मेलन में उनका स्वागत किया। समूह फोटो के लिए कनाडा के अपने समकक्ष ट्रूडो के बगल में खड़े प्रधानमंत्री मोदी को भी कनाडा के प्रधानमंत्री के साथ बातचीत करते देखा गया। दोनों नेताओं का आज शाम को द्विपक्षीय बैठक करने का कार्यक्रम है।

मोदी और मैक्रों आपस में गले मिले और समूह फोटो के बाद बातचीत की। जैसे ही जी-7 के नेता शिखर सम्मेलन स्थल के अंदर गए, दोनों नेताओं ने अपनी चर्चा जारी रखी और एक साथ अंदर चले गए।

प्रधानमंत्री कार्यालय ने ट्विटर पर कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रपति जो बाइडन, राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो से मुलाकात की।'' प्रधानमंत्री मोदी ने समूह फोटो के साथ एक कैप्शन भी ट्वीट किया, जिसमें लिखा था, ''विश्व नेताओं के साथ जी -7 शिखर सम्मेलन में।''

बेनीवाल की हुंकार रैली में झलकी आगामी विधानसभा चुनाव की आहट

हनुमान बेनीवाल ने जोधपुर के रावण का चबूतरा स्थल से अग्निपथ के विरोध में हुंकार रैली की

- **दूसरी तरफ उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री को भी कई मुद्दों पर घेरा। हुंकार रैली में आगामी विधानसभा चुनाव की आहट नजर आई। बेनीवाल ने जोधपुर में सैंकड़ों की तादाद में अग्निवीरों को संबोधित किया, लगा कि रालोपा बड़ी शक्ति बन कर उभर सकती है।**

जोधपुर, 27 जून (कासं)। नागौर सांसद एवं राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आर.एल.पी.) के संयोजक हनुमान बेनिवाल ने आज जोधपुर के रावण का चबूतरा स्थल से केंद्र की अग्निपथ योजना का एक तरफ हुंकार रैली के रूप में विरोध किया तो दूसरी तरफ उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री को भी कई मुद्दों पर घेरा। इस हुंकार रैली में आगामी विधान सभा चुनाव की आहट नजर आई। इससे लगा कि, रालोपा कोई बड़ी शक्ति बनकर उभर सकती है। जोधपुर में सैकड़ों की तादाद में जुटे युवाओं को वे संबोधित कर रहे थे।

अग्निपथ स्कीम के विरोध में सोमवार को राजस्थान में कांग्रेस ने सत्याग्रह विरोध-प्रदर्शन किया तो जोधपुर में नागौर सांसद व राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी आरएलपी संयोजक हनुमान बेनीवाल ने युवा हुंकार रैली का आयोजन किया। यहां के चबूतरा मैदान में कई जिलों से बड़ी तादाद में युवा शामिल हुए। उन्होंने युवा हुंकार महारैली में राज्य व केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि, अग्निपथ योजना युवाओं के हित में नहीं है। टीओडी की इस स्कीम यानी टूर ऑन ड्यूटी ने सेना को पर्यटन बना दिया है। सेना को ठेके पर दे दिया। सेना टूर के लिए नहीं है। अकेला हनुमान बेनीवाल भाजपा के पक्ष में तीन रैली करके गया और वैभव हार गया। यह मोदी लहर नहीं थी। भाजपा वैंटिलेटर पर थी और जनता ने उसे बाहर निकाल दिया था। जब जीत कर दिल्ली पहुंचा और देखा कि वहां किसानों के हित की बात नहीं हो रही, तो भाजपा से मैंने किनारा कर लिया। जब मैंने पार्टी छोडी, तब लोगों ने कहा कि पार्टी छोड़कर सड़क पर क्यों जा रहे हो। तब मैंने कहा- मेरे पिताजी 1977 में विधायक थे। मुझे जनता ने सांसद बनाया है, पार्टी ने नहीं।

बेनीवाल बोले- मोदीजी जब चाहे गोल कर देते हैं। राहुल-सोनिया के पीछे ईडी को लगा दिया। वे परेशान होकर इटली चले जाएंगे। यूक्रेन ने अपनी इज्जत आबरु बचाने के लिए रूस से टक्कर ली। रूस कब्जा छुड़ाने के लिए यूक्रेन पर हमला कर रहा है। लेकिन हमारा देश पाकिस्तान से कब्जा हटाने के लिए कोई हमला नहीं करता।

बेनीवाल ने कहा- गहलोत के भाई के घर ईडी की रेड हुई तो दिल्ली छोड़कर आ गए। वे कहते हैं कि केंद्र ईडी का दुरुपयोग कर रहा है। कांग्रेस ने भी ईडी का दुरुपयोग किया था। जिसको मौका मिलता है, वह चौका मारता है। मैं भी मारूंगा, लेकिन किसान हित के लिए। महंगाई के खिलाफ। रैली में बेनीवाल का भाषण शुरू होते ही लाइट चली गई। युवा हल्ला मचाने लगे। बोतलें उछालने लगे। कुछ देर के लिए लगा कि व्यवस्था बिगड़ रही है। फिर बेनीवाल ने डपटकर युवाओं को शांत कराया।

पिता की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि चूँकि उन्होंने अपनी पहली प्रार्थना वापस ली है, इसलिए जम्मू-कश्मीर उच्च न्यायालय को उनकी दूसरी प्रार्थना पर विचार करना चाहिए। क्योंकि उनके बेटे को आतंकवादी करार दिया गया था, इसलिए पुलिस ऐसे व्यक्ति के शरीर को नहीं सौंपती है और खुद ही दफनाती है।

'राजस्थान की राजनीति में पायलट ने ज़हर पिया है, महादेव ने ज़हर पिया था, उनका सावन में अभिषेक होता है'

कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम के इस बयान को लेकर अटकलों का बाजार गर्म हो गया है

- **आचार्य प्रमोद कृष्णम प्रियंका गांधी के नज़दीकी माने जाते हैं।**

जयपुर, 27 जून (का.प्र.)। राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और मंत्री शांति धारीवाल की ओर से किए गए हमले के बाद प्रियंका गांधी के नजदीकी कांग्रेस नेता प्रमोद कृष्णम ने कहा है कि, पायलट ने सियासी जहर पीया है और जहर पीने वाले का सावन में अभिषेक होगा। उनके इस बयान के मुख्यमंत्री गहलोत सहित अन्य नेताओं द्वारा दिए गए बयान से जोड़कर कई मायने निकाले जा रहे हैं। कुछ लोग तो यह भी कह हरे हैं कि आने वाले एक-दो महीने में राजस्थान में राजनीतिक परिस्थितियां बिल्कुल बदल सकती हैं।

प्रियंका गांधी के नजदीकी और सचिन समर्थक आचार्य प्रमोद कृष्णम ने इशारों में पायलट को बड़ी जिम्मेदारी दिए जाने का दावा किया है। आचार्य प्रमोद ने कहा कि, राजस्थान की राजनीति में सचिन पायलट ने जहर पीया है। महादेव ने जहर पीया था, उनका सावन में अभिषेक होता है। सावन आ रहा है, तो सियासी जहर पीने वाले का भी अभिषेक होगा।

आचार्य प्रमोद कृष्णम के साथ ही पायलट समर्थक कांग्रेस विधायक इंद्राज गुर्जर ने इशारों में सीएम पर निशाना साधते हुए ट्वीट किया- जमीन पर बैठा हुआ आदमी कभी नहीं गिरता, फ़िक्र उनको है, जो हवा में है। इसे गहलोत के बयान के जवाब के तौर पर देखा जा रहा है।

अग्निपथ भर्ती में 94 हजार आवेदन

नई दिल्ली, 27 जून (वार्ता)। सेनाओं में जवानों की भर्ती की नयी योजना अग्निपथ के देशव्यापी विरोध के बीच वायु सेना में अग्निवीरों की भर्ती के लिए तीन दिन में करीब 57 हजार युवाओं ने आवेदन किया है।

वायु सेना ने 24 जून को भर्ती प्रक्रिया के लिए ऑनलाइन पंजीकरण शुरू किया था। वायु सेना के अनुसार 27 जून तक यानी चार दिन में कुल 94 हजार युवा भर्ती के लिए पंजीकरण कर चुके थे। इसमें सोमवार का आंकड़ा नहीं जोड़ा गया है। वायु सेना का कहना है कि युवाओं में भर्ती के लिए जिस तरह का उत्साह देखने को मिल रहा है उससे लगता है कि आवेदन करने वालों की संख्या बहुत अधिक होगी। वायु सेना ने कहा है कि वह इस भर्ती के दौरान 3000 अग्निवीरों की भर्ती करेगी।

- **भर्ती के आवेदन की प्रक्रिया शुरु हुये अभी मात्र चार दिन ही हुये हैं।**

पात्रा चॉल जमीन घोटाले में संजय राउत को ई.डी. ने समन जारी किया

संजय राउत ने कहा कि, बदले की भावना से मुझ पर कीचड़ उछालने के लिए देवेंद्र फडणवीस ने ऐसा करवाया है

- **संजय राउत को मंगलवार को सुबह 11 बजे ई.डी के कार्यालय में बुलाया गया है।**

मुंबई, 27 जून (वार्ता)। महाराष्ट्र में शिवसेना के प्रवक्ता एवं सांसद संजय राउत को प्रवर्तन निदेशालय (ई.डी.) ने पूछताछ के लिए समन जारी किया है। उन्हें मंगलवार को अपराह्न 11 बजे एजेंसी के कार्यालय में बुलाया गया है।

राज्य में राजनैतिक उथल-पुथल के बीच राउत ने सोमवार को स्वयं ट्विटर पर कहा, मुझे अभी-अभी जानकारी मिली है कि मुझे ई.डी. ने बुलाया है।

उन्होंने लिखा, अच्छा है! महाराष्ट्र में बड़ी-बड़ी घटनाएं हो रही हैं। हम बालासाहेब के शिवसैनिक हैं और एक बड़ी लड़ाई लड़ रहे हैं। यह मुझे रोकने की एक साजिश है। यदि मेरा सर धड़ से अलग भी कर दिया जाए तो भी मैं गुवाहाटी का रास्ता (बागी विधायकों का) नहीं पकडुंगा। मुझे गिरफ्तार कर लें! जय हिंद।

उल्लेखनीय है कि अपराधिक कमायी के शोधन मामलों की जांच करने वाली एजेंसी ई.डी. ने धन शोधन निवारक अधिनियम, 2002 के तहत जांच के सिलसिले में राउत की पत्नी वर्षा राउत और उनके दो सहयोगियों की अप्रैल में 11.15 करोड़ रुपये की संपत्ति को अस्थायी तौर पर कुर्क कर लिया था। संजय राउत ने प्रवर्तन निदेशालय (ई.डी.) की ओर से जारी समन के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता व पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडनवीस को जिम्मेदार ठहराया है।

राउत को ई.डी. ने पूछताछ के लिए समन जारी किया है। उन्हें मंगलवार को अपराह्न 11 बजे एजेंसी के कार्यालय में बुलाया गया है। राज्य में राजनैतिक उथल-पुथल के बीच राउत ने सोमवार को ट्विटर पर कहा, मुझे अभी-अभी जानकारी मिली है कि मुझे ई.डी. ने बुलाया है।

उल्लेखनीय है कि अपराधिक कमायी के शोधन मामलों की जांच करने वाली एजेंसी ई.डी. ने धन शोधन निवारक अधिनियम, 2002 के तहत जांच के सिलसिले में राउत की पत्नी वर्षा राउत और उनके दो सहयोगियों की अप्रैल में 11.15 करोड़ रुपये की संपत्ति को अस्थायी तौर पर कुर्क कर लिया था। राउत ने कहा कि ईडी बेवजह परेशान कर रही है।

चर्च...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संबंध में करीब 57 केस दर्ज किए गए। बैंच ने कहा कि ''आप जो बता रहे हैं, वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण हैं और यदि यह सच है तो हम इस केस की सुनवाई ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद प्रथम दिन से ही करेंगे।'' याचिका में यह भी मांग की गई कि शीर्ष अदालत ने वर्ष 2018 में जो निर्देश जारी किए थे, उन्हें लागू किया जाए। उसने अपने निर्देश में कहा था कि घृणास्पद अपराधों के विरूद्ध एफ.आई.आर. दर्ज करने के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किए जाए।

'अम्बानी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि वह दखलंदाज व अनाधिकार प्रदेश करने वाला है हालांकि उनका दावा है कि वह सोशल एक्टिविस्ट हैं। यह याचिका राजनीति से प्रेरित, सारहीन और मिथ्या है। केन्द्र की तरफ से अपील करते हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि अम्बानी को सुरक्षा दिए जाने का त्रिपुरा से कोई लेन देन नहीं है और त्रिपुरा हाई कोर्ट को यह याचिका स्वीकार करने का न्यायाधिकार नहीं है।

विपक्ष के राष्ट्रपति ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सर्वसम्मत उम्मीदवार के रूप में अपना पर्चा भरा, उस समय विपक्ष के अन्य नेताओं के साथ, समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव, तृणमूल कांग्रेस नेता अभिषेक बनर्जी, जम्मू-कश्मीर की नैशनल कॉन्फ्रेंस के नेता फारूक अब्दुल्ला, आर.एल.डी. के जयन्त चौधरी, सी.पी.आई. (एम.) के सीताराम येचुरी, डी.एम.के. के ए. राजा, सी.पी.आई. के डी. राजा तथा तेलंगाना के मंत्री एवं टी.आर.एस. के नेता के.टी. रामाराव संसद भवन में मौजूद थे।

बाद में मीडिया को संबोधित करते हुए, राहुल गांधी ने कहा कि इस सर्वोच्च संवैधानिक पद के लिये सिन्हा की उम्मीदवारी के समर्थन में सारा विपक्ष एकजुट है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय जनता दल की मीसा भारती, रिवॉल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के एन के प्रेमचन्द्र तथा इंडियन मुस्लिम लीग के मोहम्मद बशीर भी मौजूद थे।

लेकिन दो प्रमुख दलों-आम आदमी पार्टी तथा झारखंड मुक्ति मोर्चा-ये नामांकन के समय अपने प्रतिनिधि नहीं भेजे। शिव सेना के प्रतिनिधि भी मौजूद नहीं थे क्योंकि वह इस समय अपने अंदरूनी संकटों से जूझ रही है।

दो गैर भाजपा पार्टियाँ-मायावती की बसपा तथा ओडिशा की बीजेडी ने इस चुनाव के लिये आदिवासी प्रत्याशी मुर्मू का समर्थन कर दिया है। यदि वे निर्वाचित हो जाती है तो दौपद्री मुर्मू भारत की प्रथम आदिवासी राष्ट्रपति होंगी।

सिन्हा ने नामांकन प्रपत्रों के 4 सैट राज्यसभा के महासचिव पी सी मोडी को सौंप दिया, जो राष्ट्रपति चुनाव के रिटर्निंग ऑफिसर हैं।

पूर्व नौकरशाह तथा उसके बाद, अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे सिन्हा को अनेक विपक्षी नेताओं की मीटिंग में 21 जून को राष्ट्रपति चुनाव के लिये विपक्ष का संयुक्त प्रत्याशी बनाने का निर्णय लिया गया था।

अंतिम क्षणों में सिन्हा को और मजबूत करते हुये, के चन्द्रशेखर राव के नेतृत्व वाली तेलंगाना राष्ट्र समिति (टी.आर.एस. ने आज सुबह उन्हें अपना समर्थन देने की घोषणा कर दी, जबकि पहले उसे उनके चयन के तरीके तथा अपनी प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के साथ मंच साझा पर ऐतराज था।

नम्बरों का गणित सिन्हा के पूरी तरह से खिलाफ है और नैशनल डैमोक्रेटिक एलायंस की दौपद्री मुर्मू के जीतने की संभावना सर्वाधिक है। लेकिन आज विपक्ष ने जो ताकत दिखा उसे महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि विपक्ष भाजपा के खिलाफ एकजुटता दिखाने का प्रयास कर रहा है।

सिन्हा ने कहा कि ''रबर स्टाम्प'' राष्ट्रपति नहीं चलेगा और अगर मूर्मू बयाज वे चुने जाते हैं तो वे तो वे ''ज्यादा संवैधानिक'' प्रमुख बने थे। उन्होंने कहा कि मुर्मू से निजी लड़ाई नहीं है यह लड़ाई तो भारत के संविधान को बचाने की है।

उन्होंने कहा कि वे अपने पुराने भाजपा मित्रों से भी समर्थन के लिए संपर्क करेंगे। उन्होंने कहा, कि पुरानी भाजपा में वे आंतरिक लोकतंत्र का अंग थे। वर्तमान भाजपा में इसका अभाव है।

सत्तारूढ़ पार्टी के पास इलैक्टोरल कोलाज के 49 प्रतिशत वोट है और राष्ट्रपति को जीतने के लिए 50 प्रतिशत वोट चाहिए। नामांकन भरने की अंतिम तिथि 29 जून है और चुनाव 18 जुलाई को होगा।

शिंदे सेना को रिलीफ मिली सुप्रीम कोर्ट ...

'उन्होंने पहले...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि वे शिन्दे के नेतृत्व वाले शिवसेना के विद्रोही गुट द्वारा उनके खिलाफ पेश किये गये अविश्वास प्रस्ताव पर अपना विस्तृत शपथ-पत्र पेश करें।

जब स्पीकर ने, विद्रोही गुट द्वारा उन्हें हटाये जाने के प्रस्ताव की प्रामाणिकता तथा वैधता पर सवाल खड़े किये, तो सर्वोच्च न्यायालय ने एक दिशा निर्देश जारी किया। शिन्दे गुट ने संविधान ने अनुच्छेद 179 तथा महाराष्ट्र विधानसभा नियमों के नियम 11 के तहत उन्हें हटाये जाने के लिये 22 जून को एक नोटिस भेजा था।

जब डिप्टी स्पीकर के वरिष्ठ वकील राजीव धवन बैंच को बताया कि डिप्टी स्पीकर को हटाये जाने के प्रस्ताव की प्रामाणिकता इसलिये स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि यह ई-मेल द्वारा भेजा गया था, तो अदालत ने डिप्टी स्पीकर कार्यालय का सारा रिकॉर्ड माँग लिया।

यह पूछे जाने पर विद्रोही गुट ने बम्बई उच्च न्यायालय में याचिकायें दायर क्यों नहीं की तो शिन्दे के वरिष्ठ वकील नीरज किशन कौल ने अदालत से कहा कि अगर विद्रोही विधायक मुम्बई में कदम भी रखते, तो उन्हें अपनी जान का खतरा हो सकता था। उन्होंने कहा, ''अल्पमत में आ चुका शिवसेना विधायक दल राज्य-तन्त्र को समाप्त करते हुये, हमारे घरों पर हमले कर रहा है। वे कह रहे है। कि असम में हमारी लाशें ही वापस आयेंगी। मुम्बई का माहौल ऐसा नहीं रहा कि हम वहाँ अपने अधिकारों के न्यायिक कार्यवाही कर सकें।''

महाराष्ट्र सरकार के वकील द्वारा 39 विद्रोही विधायकों के बारे दिये गये बयान को रिकॉर्ड पर ले लिया, जिसमें उन्होंने कहा था कि इस सम्बन्ध में यथेष्ट कदम उठाये जा चुके हैं तथा राज्य सरकार और सुनिश्चित कर देगी कि इन विधायकों की जान, स्वतन्त्रता एवं सम्पत्ति को नुकसान नहीं पहुँच।

कौल ने जोर देते हुये कहा कि डिप्टी स्पीकर ऐसी स्थिति में विधायकों की डिसक्वालिफिकेशन की कार्यवाही करने के लिये समक्ष नहीं हैं, जब उन्हें खुद को हटाये जाने की याचिका विचाराधीन है। उन्होंने कहा 39 विधायक सेना के अल्पमत वाले गुट के खिलाफ एकजुट हैं।

कौल ने धवन के बयान को अदालत द्वारा रिकॉर्ड किये जाने की जरूरत बताई, लेकिन अभिषेक मनु सिंघवी ने यह कहते हुये आपत्ति जताई कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना की ओर से प्रस्तुत वरिष्ठ वकील देवदत्त कामत ने कौल की बार-बार दोहराई जा रही इस माँग के बीच कहा ''मैं यह कहने की अनुमति चाहता हूँ कि ऐसा कोई आदेश नहीं है जिसमें कार्यवाहियों पर ''स्टे'' दिया गया हो। ऐसा कोई ऑर्डर पारित नहीं किया जा सकता डिसक्वालिफिकेशन के सम्बन्ध में दसवीं अनुसूची के पैरा 6 पर जरा नजर डालिये।''

उन्होंने इस पर आपत्ति जताई कि यह याचिका विचारणीय नहीं है। कामत ने कहा, व सर्वोच्च न्यायालय ने कर्नाटक विधायक केस में, उच्च न्यायालय न जाकर, सीधे सर्वोच्च न्यायालय जाने से सम्बन्धित वादियों के प्रयास का समर्थक नहीं किया था। इसके अलावा, केवल अविश्वास प्रस्ताव के भूत के कारण, विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने का प्रश्न ही नहीं है। विधानसभा वो नियम इसकी अनुमति नहीं देते। मुख्यमंत्री में अविश्वास व्यक्त करने के लिये, कोई कारण नहीं दिया गया है।

लेकिन जहाँ तक स्पीकर का प्रश्न है, अनुच्छेद 179 के तहत, उन्हें हटाये जाने के कारण दिये जाना जरूरी है। सदस्यों के केवल यह कहने से काम नहीं चल सकता कि उन्हे विश्वास नहीं है। यह आरोप लगाये जाने ही हो सकता है।''

उन्होंने दलील दी कि सर्वोच्च न्यायालय उन मामलों में दखल नहीं दे सकता, जो स्पीकर के समक्ष विचाराधीन हैं। उन्होंने कहा कि इस समय डिप्टी स्पीकर ही स्पीकर की भूमिका निभा रहे हैं क्योंकि स्पीकर का पद खाली है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908